गान्धी जी

गांधी जी

पद्यमय संक्षिप्त जीवनी

लेखक
श्रीनाथसिंह

प्रकाशक
'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद

तृतीयवार] १९५८ [मूल्य २५ न० पै०

भूमिका

हिन्दी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में मुझे महात्मा गांधी के एक सहयोगी के रूप में कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उस समय उनके जीवन की एक-एक घटना मन पर अंकित होती जाती थी। ३० जनवरी सन् १९४८ की शाम को, जब मैंने उनकी मृत्यु का समाचार सुना, तब मेरे मन पर उन घटनाओं की स्मृति बदली सी बनकर छा गई जो दो ही चार घन्टों में इस छोटी सी पद्यमय संक्षिप्त जीवनी के रूप में बरस पड़ी।

इस संक्षिप्त जीवनी को मैंने उसी वर्ष बच्चों के मासिक पत्र बालबोध में छपवाया। बाल पाठकों ने इसे पसन्द किया और यद्यपि वह बहुत छोटी थी तथापि पुस्तक रूप में इसका और भी स्वागत हुआ।

इधर कई वर्षों से यह अप्राप्य थी। परन्तु गाँधी जी के बारे में अभी भी जानने और सुनने की लोगों में, खासकर बच्चों में, इतनी इच्छा है कि मैं इसे पुनः प्रकाशित करना अपना एक कर्त्तव्य समझ रहा हूँ।

६२, सुभाषनगर,
इलाहाबाद
२५ अगस्त सन् १९५८

श्रीनाथसिंह

गांधी जी

[१]

आश्विन बदी द्वादसी संवत
उनइस सौ पच्चीस महान्।
दो अक्टूबर सन् अट्ठारह-
सौ उनहत्तर का दिन जान॥

[२]

जन्म लिया जब गांधी जी ने
पुरी सुदामा में भाई।
नाम पिता का करमचंद था
माता थीं पुतली बाई॥

[३]

ज्यों-ज्यों बढ़ने लगा पुत्र यह
बढ़ने लगा पिता का मान।
राजकोट जो गये वहाँ के
राजा के होकर दीवान॥

[४]

तेरह वर्ष में हुई शादी
उसी उम्र की थी दुलहन।
कहते सब कस्तूरबा उन्हें,
भोला मुख भोली चितवन॥

[५]

चार बरस के बाद ब्याह के
किया उन्होंने मैट्रिक पास।
आगे पढ़ने में न लगा मन,
गए विलायत मोहनदास॥

[६]

पर माता ने कहा कि बेटा
एक पूरना मेरी आस।
पर नारी को बहन समझना,
नहीं चीखना मद्य व मांस॥

[७]

लन्दन में पहुँचे गाँधी जी
साहब बनने की ठानी।
गूँज उठी उनके कानों में
लेकिन माता की बानी॥

[८]

इससे वे बैरिस्टर बनकर
सही सलामत घर आए।
इस प्रकार इक्कीस वर्ष
बीते उनके अति मन भाए॥

[९]

सिर्फ वर्ष दो रह स्वदेश में
फिर वे गए समुन्दर पार।
अफ्रीका में किया वकालत
ठान लिया गोरों से रार॥

[१०]

फिर आये फिर गए वहाँ वे
और बढ़ा दिन-दिन संग्राम।
हार न मानी गाँधी जी ने
जब तक पूरा हुआ न काम॥

[११]

गोरों के कहने से उनको
चला मारने एक पठान।
पर वह उनका शिष्य बन गया
परिवर्तन यह हुआ महान॥

[१२]

सैंतीस वर्ष के हुए जब वे
लगे सोचने मन ही मन।
हम औ बा क्यों रहें न ऐसे
जैसे भाई और बहन ॥

[१३]

बा तो थीं संतान हिंद की
रुक्मिन सीता सती समान।
"जो जो कहो करूँगी सब मैं"
बोलीं मीठे बचन महान् ॥

[१४]

इस प्रकार यह पुरुष दूसरा
भीष्म पितामह के पश्चात्
ब्रह्मचर्य्य के पालन में रत
रहा निरन्तर फिर दिन रात॥

[१५]

इस प्रकार व्रत ठान लिया जब
छेड़ा सत्याग्रह संग्राम।
अर्पित उसमें किया सभी कुछ
अपना तन-मन धन औ धाम॥

[१६]

पति पत्नी तब गए जेल में
फिर छूटे फिर जेल गए।
कष्ट भोगना संकट सहना
इस जीवन के खेल भए॥

[१७]

सन् १४ में १४ दिन का
धारण किया घोर अनशन ।
श्री रवीन्द्र ठाकुर ने उनको
कहा महात्मा किया नमन् ॥

[१८]

उसके बाद लगा कहलाने
महात्मा यह वीर व्रती ।
सन १७ में भारत आया
खुला आश्रम सबरमती ॥

[१९]

रोलट एक्ट बना उनइस में
उसका किया विरोध प्रबल ।
'नवजीवन' अखबार निकाला
बढ़ी खिलाफत की हलचल ॥

[२०]

सन् २१ में विलायती
वस्त्रों की जलवाई होली ।
तब अँग्रेजों ने चलवाई
लाठी कहीं, कहीं गोली ॥

[२१]

सन् २२ में ६ सालों के
लिए जेल में बन्द हुए ।
लेकिन सन् २४ में ही वे
बिना शर्त स्वछन्द हुए ॥

[२२]

दंगा जब कोहाट में हुआ
२१ दिन का किया उपास ।
हिन्दू मुस्लिम के मिलाप में
था उनको बेहद विश्वास ॥

[२३]

उसी वर्ष वे बेलगाँव में
कांग्रेस के हुए सदर ।
कोने-कोने में भारत के
फिर तो उनकी बढ़ी कदर ॥

[२४]

सन् उनइस सौ तीस मार्च में
डांड़ी को प्रस्थान किया ।
भंग किया कानून नमक का
नया देश को ज्ञान दिया ॥

[२५]

सन ३१ में गांधी इरविन
पैक्ट हुआ हारी सरकार ।
लेकिन वह तुरन्त ही टूटा
बढ़ा पुलिस का अत्याचार ॥

[२६]

दलित वर्ग का अँग्रेजों ने
करना चाहा पृथक गिरोह ।
तब बापू ने रचा आमरण
अनशन तज प्राणों का मोह ॥

[२७]

दुनिया के कोने-कोन से
पहुँचा लन्दन यह संदेश ।
गांधी जी के प्राण बचाओ
उन्हें न होने दो कुछ क्लेश ॥

[२८]

इस प्रकार हिन्दुत्व रह गया
फिर बापू की हुई विजय ।
आत्म-शुद्धि के लिए किया फिर
इकइस दिन का व्रत निर्भय ॥

[२९]

सन् ३४ में छोड़ काँग्रेस
सेवा ग्राम में किया वास ।
ग्रामों के उद्धार में लगे
किया किसानी का अभ्यास ॥

[३०]

सन् ३५ में कहा हिन्द की
भाषा हो हिन्दुस्तानी ।
लेकिन उनकी बात नहीं यह
हिन्दी वालों ने मानी ॥

[३१]

युद्ध करो मत उन्तालिस में
हिटलर से यह किया विनय ।
सन् ४० में किया व्यक्ति-गत
सत्याग्रह का फिर निश्चय ॥

[३२]

चलती रेल तले बम डाला,
दुश्मन पर हर सके न प्रान ।
तब तक कौन मार सकता है
जब तक रक्षक है भगवान ॥

[३३]

आए विकट बयालिस के दिन
बन्दी हुए काँग्रेस जन।
गोली की बौछारों से
जनता का होने लगा शमन॥

[३४]

पर गाँधी की एक टेक थी—
"अंग्रेजों छोड़ो भारत।"
क्रमशः व्याप गया वसुधा में
यह बापू का दृढ़तम मत॥

[३५]

आगा खां के महल में रखा
घेर कटीले तारों से।
बैठाये खूँ-ख्वार संतरी
सजे विविध हथियारों से॥

[३६]

मृत्यु हुई देसाई जी की
लेकिन बापू अडिग रहे।
२१ दिन का उपवास किया
'बा' के वियोग के कष्ट सहे॥

[३७]

सन् चौवालिस में छोड़ दिया
सरकार ने उन्हें फिर से जब।
श्री जिन्ना को सत्रह दिन तक
समझाया बापू ने तब॥

[३८]

पर वे माने नहीं और बँट गया
अन्त में भारत देश।
भस्म हुआ पंजाब बढ़ा
बापू को इससे बेहद क्लेश॥

[३९]

नोवाखाली कलकत्ता की
आग दबा दिल्ली आये।
प्राण हथेली में लेकर
अङ्गारों पर बापू धाये।

[४०]

ठान दिया उपवास कहा—
"बस, एक यही है मेरी टेक।
मर जाऊँगा अगर न होंगे
हिन्दू मुसलिम दोनों एक।"
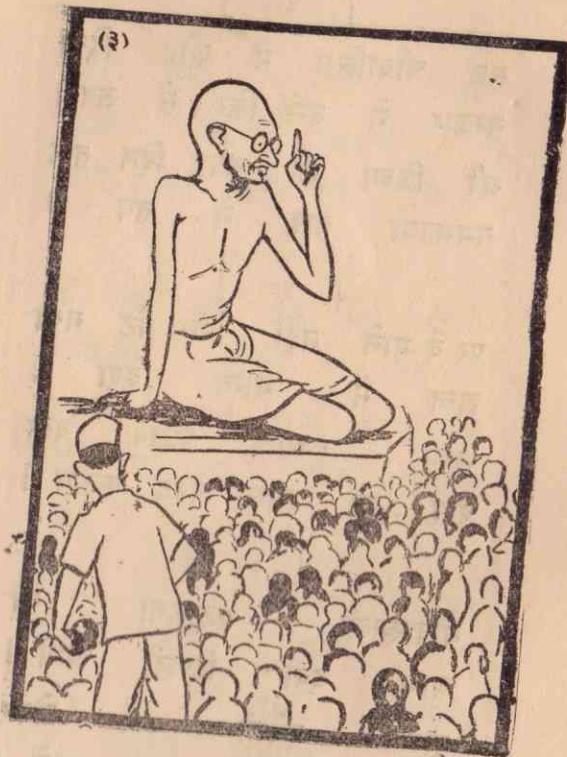
[४१]

दिल्ली की प्रार्थना-सभा में
उन पर बम का वार हुआ ।
परमात्मा था रक्षक फिर भी
वह तुरन्त बेकार हुआ ॥

[४२]

जनता ने मानी सब शर्तें
बुझने लगी द्वेष-होली ।
तभी एक पापी मूरख ने
बापू को मारी गोली ॥

[४३]

३० जनवरी सन् अड़तालिस
संध्या साढ़े पाँच बजे।
हत्यारे को हाथ जोड़कर
बापू ने निज प्राण तजे॥

[४४]

भारत में छा गया अंधेरा
पिघल गई दुनिया सारी।
गांधी जी की टेक रह गई
चमकी एक ज्योति न्यारी॥

[४५]

सत्य अहिंसा सेवा संयम
की जग में हुई विजय।
भारत का जल-थल पग-पग पर
लगा दीखने गांधी मय॥

[४६]

इन छन्दों का पाठ करेंगे
जो ले सदा राम का नाम।
उनके मन को शान्त मिलेगी
और पूर्ण होंगे सब काम॥

देश सेवा प्रेस, ५४ ह्वीवेट रोड, इलाहाबाद—३